नहीं जीना है अब मुझे

सूरज की झिलमिलाती रोशनी खिड़की से अंदर दौड़ती आ रही थी। वे उस छोटी-सी बच्ची की आँखों को एक चुम्मा दिया। नींद की मदहोशी में वह बिस्तर पर लेटी हुई थी।

'मुस्कान ..... उसकी माँ ने उसे एक लंबी पुकार दी।

उसकी आँखें खुल गई। आज उसे स्कूल जाना था। आतंकवाद की खतरा से कई दिनों तक स्कूल बंद थी। होटों पर एक प्यारी सी मुस्कुराहट लेकर उसकी प्यारी सी बड़ी बहन जारा की उँगलियाँ पकड़कर वह चल पड़ी स्कूल की ओर।

'मुस्कान' - जैसी ही नाम, वैसी ही काम। जब स्कूल बस पर चढ़ी, तब उसने सभी को एक प्यारी सी हँसी देकर वह अपनी जगह पर बैठ रही थी। वह उसकी सहेली से बातें कर रही थी। तभी, बस ने एक ज़ोर का ब्रेक मारा।

उस बेक की आघात से वह गिर गई। जब उठा, तब उसने बंदूक पकड़े हुए चार-पाँच लोगों को देखा। वह उनके चेहरे छुपा रहे थे। उनमे से एक अजीब आदमी ने उसकी बहन ज्वारा को ~~अपने~~ उसके बालों में पंजा फँसाकर खसीटते हुए ले गई। मुस्कान चीखी ... चिल्लाई। पर उन लोगों ने ध्यान नहीं दिया। मुस्कान की हँसी आँसू में बदल गया।

जब घर पहुँचा तब देखा कि अम्मी बेहोश पड़ी थी और अब्बू की आँखे लाल-लाल सी हो गई थी। वह दोनो धनरा चुके थे। तभी एक पुलिस जीप आकर उसकी अब्बू की कान में कुछ बात कर रही थी। सुनते ही अब्बू जमीन पर गिर पड़ा। वह ज्वारा.. ज्वारा पुकारकर एक पागल की तरह भटकता रहा। उनकी चहेती बेटी ज्वारा की शरीर निश्चल पड़ा हुआ था - वह भी कचरे की ढेर में। वह बिलकुल नंगी थी। माँ जल्दी से जाकर अपनी चोली से

छुपा लिया। उनके ज़ारा की आज ऐसी स्थिती हो रही थी। मुस्कान उनकी प्यारी बहन को खो चुकी थी। वह ज़ारा... जिसे एक कील से भी डर लगता था.. आज उसकी शरीर पूरा तुड़वा गया था। अन्वू जल्दी से उठकर पुलिस स्टेशन चला गया और उनकी खिलाफ़ एक केस दर्ज करा दी।

अब मुस्कान की हालत भी बहुत बिगड़ चुकी थी। वह उनकी बहन की उँगलियाँ पकड़कर रो रही थी। रात में उसे नींद न आई। जब भी आँखें बंद करें तो वह घसीटने का नज़ारा और ज़ारा की रोना ही कानों में गूँज रहा था।

अन्वू जब घर पर आया तब अम्मी से कहा कि अब इनसाफ़ होकर रहेगा। उन्होंने मेरी बेटी को... मेरी बेटी को.... । बाकी कहने की हिम्मत नहीं था उनमें। उस रात वह अपनी अम्मी को कसके पकड़कर रो रही थी।

रात बारह बज चुका था। तभी दरवाज़े पर कोई धटधटा रहा था। पर जब देखा तब कोई नहीं था।

मुस्कान की सारी मासूमियत भी चला गया। वह अपनी बहन की मौत का बदला लेना चाह रही थी। इसीलिए उसने सोशियल मीडिया पर सारी कहानी लिख दी। आतंकवादियों के खिलाफ़ वह अपनी शब्दों से लड़ी।

वह हमेशा सोचती थी कि 'मैं कब तक हँस सकूँगा? कब वापस उस हादसे को भूल सकूँगा? उसे पता थी कि ज़रूर उसकी भी कतल होगी।

रात के बारह बज चुके थे। दरवाज़ा ज़ोर से धटधटाने लगे। इस बार अब्बू और अम्मी देखने चले गए। मुस्कान ने बस दो बड़ी गोलियों का आवाज़ सुनी। वह उसकी कानों में गूँज रही थी। जब वह गई... तो खून में भीगे अब्बू और अम्मी को देखकर टूट पड़ी वह।

महीने बीत गई। पर मुस्कान की चेहरे पर हँसी बिलकुल नहीं थी। वह किसी और दुनिया में चली गई। हमेशा आत्महत्या की चिंता में मगन थी वह।

एक दिन उसे एक कॉल आया और किसी अजनबी ने ये बताया कि आतंकवादियाँ उसकी मार करने आ रही है। वह कहती रही: "मैं तो अब कभी भी हँस नहीं सकता तो ऐसी जिंदगी जीकर क्या फ़ायदा?" और वैसी भी वह लोग अभी आकर मुझे मार देंगे तो मरना ही बेहतर है। जिंदगी ने मुझे बहुत मार पराजयें दिए है कि मेरी हँसी अब नहीं रहे तो मैं भी जा रही हूँ। अम्मी-अब्बू मेरी इंतजार करते होंगे।" यह सब कहकर वह ऊपर जा रही थी। जब नई अम्मी आकर दरवाजा घटघटाई तब कोई जवाब नहीं था। जब उन्होंने दरवाजा तोड़ा, तब देखा कि मुस्कान फैन पर लटक रही है। नई अम्मी ने बड़े ही दुख से कहा "मेरी मुस्कान... आखिर तू मुस्कुराई... पर उसी मुस्कुराहट से तू अलविदा कह गई"

बिस्तर पर कुछ कागज के टुकडे थे। बड़ी अम्मी वह पढ़ी:
"नहीं जीना है अब मुझे... इस ज़िंदगी में चलने वाली हूँ मैं एक नए दुनिया में"
वह खुदकुशी नहीं की थी... उसकी मार की थी। ज़िंदगी की मुस्कुराहट को तबाह करके, जीवन की परेशानियों ने अब मुस्कान को मार दिया था।

सूरज की झिलमिलाती रोशनी अभी भी मुस्कान की आँखों को चुम्मा दे रही थी। पर वह आँखें हमेशा केलिए बंद ही रहा।